

## 9. कविता का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिन्दी के मशहूर कवि श्री. धूमवीर भारती की कविता संग्रह 'सात गीत वर्ष से चुनी गई टूटा पहिया' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए। कविरि�थ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत केंको। क्योंकि और वों से रचति दुर्लभ चक्रव्यूह में अक्षौहणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की विषिमता ऐसी रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषण की अभिमन्यु के समान आ जाए तो मैं, टूटा पहिया उसका सहारा हो जाऊँगा। कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली नरियुध आवाज़ यानी अभिमन्यु को अपने बरह्मास्तरों से कुचल देना चाहते हैं। चक्रव्यूह में फंस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पड़ने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बड़े-बड़े महारथी लोगों के बरह्मास्तरों से लोहा ले सकता हूँ। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से आम जनता की आवाज़ और ज़रूरतों को कुचल देते वक्त मानव मूल्यों की सहायता से हम उस शोषण से बच पाएँ। टूटा पहिया फरि भी अपने महत्व की याद दलिती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना। इतहिस की सामूहिक गतिसित्य और धूम को छोड़कर असत्य और अधूम के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्म कि शक्तियों के बरिष्ठ करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हुआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पड़ेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढ़ते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है। मानवीय मूल्यों की शक्तिशक्ति करनेवाली यह कविता हर तरह से बलिकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।